नामांक Roll No.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | |

No. of Questions — 3

No. of Printed Pages — 7

# SS—34–1—T.W. (Hindi)

## उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2010

**वैकल्पिक वर्ग III** ( OPTIONAL GROUP III — COMMERCE )

## हिन्दी टंकण लिपि

## ( TYPEWRITING IN HINDI )

समय — 1 घण्टा

पूर्णांक — 60

**परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :**

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।
2. प्रत्येक कागज की एक तरफ टंकण करें ।
3. प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है ।
4. प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश ( Double Spacing ) देकर टंकण करना है ।

1. निम्नलिखित अवतरण को टंकित कीजिए :

अंक

टंकण — 28

सजावट — 2

कुल — 30

खेलों का महत्त्व

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य का स्थान सर्वोपरि है । उत्तम स्वास्थ्य अनोखा वरदान है, यह अनमोल पूँजी है । शास्त्रों में निरोगी काया को पहला सुख बताया गया है । वास्तव में स्वस्थ शरीर ही संसार के समस्त सुखों का आनन्द ले सकता है । अस्वस्थ व्यक्ति के लिए तो जीवन एक भार होता है, इसलिए शरीर को स्वस्थ रखना हमारा कर्त्तव्य है । शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नियमित दिनचर्या, पौष्टिक भोजन, उचित व्यायाम और खेलकूद की आवश्यकता होती है ।

विद्यार्थी और युवा पुरुष के जीवन में खेल का महत्त्वपूर्ण स्थान है । उसे अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए प्रतिदिन नियम से खेलना चाहिए । नियमित रूप से खेलों में भाग लेने वाला व्यक्ति सदैव स्वस्थ, फुर्तीला और चुस्त बना रहता है । खेलते समय जो पसीना बहता है, उसके साथ शरीर के भीतर की सारी गंदगी बाहर निकल आती है । खेल से शरीर के प्रत्येक अंग का व्यायाम हो जाता है । इस कहावत से हम सभी भली-भाँति परिचित हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ

मस्तिष्क का निवास होता है । खिलाड़ी में कुछ गुण अपने आप ही आ जाते हैं : जैसे — अनुशासन । खेलते समय खिलाड़ी को कई नियमों का पालन करना पड़ता है और अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना पड़ता है । वह हार-जीत को सहन करना सीख लेता है । इसीलिए हार या जीत उसे उद्वेलित नहीं करती; न ही वह एक हार से निराश होता है, वरन् हारते ही पुन: जीतने का संकल्प लेकर तैयारी में जुट जाता है । वह सीख जाता है कि न तो उसकी जीत स्थायी है और न हार । जो आज जीता है, वह कल हार भी सकता है । वह मानसिक रूप से सुदृढ़, अनुशासित और संकल्पवान बन जाता है । जीवन की छोटी-छोटी बाधाएँ उसे विचलित नहीं कर पातीं । वह उन्हें भी जीवन रूपी खेल का एक अंग ही मानता है ।

खिलाड़ी युवक या युवती का मन इधर-उधर नहीं भटकता । वह अपने लक्ष्य को निर्धारित करके उसकी पूर्ति में जुट जाता है । खेलने से उसका शरीर अच्छी तरह थक जाता है । अत: बिस्तर पर पड़ते ही उसे नींद आ जाती है । बिस्तर पर लेटकर वह इधर-उधर की ऊल-जलूल बातें नहीं सोचता । ऐसे व्यक्ति की सोच भी सकारात्मक होती है । वह किसी के विनाश अथवा पतन की बात नहीं सोचता, वरन अपनी ही उन्नति के स्वप्नों में खोया रहता है ।

खेल से मनुष्य में पारस्परिक सहयोग और सौहार्द की भावना पैदा होती है । खेल में कोई व्यक्ति किसी की जाति अथवा धर्म नहीं देखता, वह खेल देखता है । खेल में छोटा-बड़ा,

अमीर-गरीब सब बराबर हैं । सब आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे की सहायता करते हैं । एक-दूसरे के गले मिलते हैं । खेल से व्यक्ति में बंधुत्व की भावना पैदा होती है ।

खेल व्यक्ति में साहस, उत्साह और लगन जैसे सद्‌गुणों का विकास करता है । व्यक्ति अपनी भूलों से सीखता है और उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है । इससे संकल्प-शक्ति का विकास होता है । वह कठिन से कठिन समय में तुरन्त निर्णय लेना सीख लेता है ।

खेल से व्यक्ति में नेतृत्व करने की क्षमता का विकास होता है । उसमें आगे बढ़ने और जीतने की इच्छा जाग्रत हो जाती है । वह जीवन के किसी क्षेत्र में पीछे नहीं रहना चाहता । वह दूसरों से सहयोग लेना और देना सीख जाता है और आवश्यकता पड़ने पर उनकी शक्ति का अधिकतम उपयोग कर लेता है ।

विद्यार्थियों के लिए तो खेल परमोपयोगी होते हैं । इससे उनका स्वास्थ्य तो ठीक रहता ही है, वे मानसिक रूप से भी तरो-ताजा बने रहते हैं । प्राय: ऐसे विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थियों की अपेक्षा बात को जल्दी समझ लेते हैं ।

खेलों से हमारा तन-मन, स्वस्थ रहता है जिससे हर कार्य को करने में हमें अपूर्व आनन्द मिलता है । खेल व्यक्ति के जीवन को अनुशासित करता है, अत: इन्हीं बातों को देखते हुए हमें खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए ।

2. निम्नलिखित पत्र को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :

**अंक**

टंकण — 12

सजावट — 3

कुल — 15

रामचन्द्र हनुमानदास एण्ड सन्स

( अनाज के थोक व्यापारी एवं कमीशन एजेन्ट )

तार का पता —'हनुमान'

टेलीफोन सं० — 074/245674

पत्र सं० — 10/111

कोड सं० — 'जय विजय'

E–II/18 मुख्य अनाज मण्डी,

आत्मानन्द रोड,

पालनपुर ।

दिनांक — 10 जनवरी, 2010

मेसर्स हरि ट्रेडर्स,

मुख्य अनाज मण्डी,

गोरखपुर ।

प्रिय महोदय,

निवेदन है कि हमने आपको दिनांक 09–09–09 को 50170/- रु० का माल बेचा था । व्यापारिक परम्परा के अनुसार आपको हमें 7 दिनों में भुगतान करना था । हमने इस संदर्भ में

आपको दिनांक 30 – 09 – 09 एवं दिनांक 15 – 10 – 09 को दो पत्र भेज कर भुगतान के बारे में स्मरण भी दिलाया था । परन्तु बड़े ही खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि आपने न तो इन दोनों पत्रों का प्रत्युत्तर दिया एवं न ही आपने हमारा भुगतान भेजा है ।

इस सन्दर्भ में आपसे पुन: निवेदन है कि आप हमारा भुगतान मय 18% वार्षिक दर से, पत्र प्राप्ति के 7 दिनों के अन्दर भिजवाने की कृपा करें । अन्यथा विवश होकर हमें अन्य कार्यवाही करनी पड़ेगी । आशा है कि आप हमें अन्य कार्यवाही करने के लिए विवश नहीं करेंगे । विश्वास है कि आप सदैव की भाँति सहयोग करेंगे ।

धन्यवाद ।

हम हैं आपके,

रामचन्द्र हनुमानदास एंड संस के लिए ।

सही

( अमर दत्त व्यास )

मैनेजर

3. निम्नलिखित सारणी को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :

**अंक**

टंकण — 12

सजावट — 3

कुल — 15

राजस्थान की जनसंख्या सम्बन्धी आँकड़े

| जिला | जनसंख्या ( हजार में ) | | दसवर्षीय वृद्धि-दर ( प्रतिशत में ) | लिंग-अनुपात ( प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या ) | घनत्व ( प्रति वर्ग किलोमीटर ) |
|---|---|---|---|---|---|
| | 1991 | 2001 | | | |
| श्रीगंगानगर | 1403 | 1789 | 27·6 | 873 | 163 |
| हनुमानगढ़ | 1220 | 1518 | 24·4 | 894 | 157 |
| बीकानेर | 1211 | 1674 | 38·2 | 890 | 61 |
| चूरू | 1543 | 1924 | 24·7 | 948 | 114 |
| झुन्झुनूँ | 1582 | 1914 | 20·9 | 946 | 323 |
| अलवर | 2297 | 2992 | 30·3 | 886 | 357 |
| भरतपुर | 1652 | 2101 | 27·2 | 854 | 414 |
| धौलपुर | 750 | 983 | 31·2 | 827 | 324 |
| करौली | 928 | 1210 | 30·4 | 855 | 218 |
| सवाई माधोपुर | 876 | 1117 | 27·6 | 889 | 248 |
| दौसा | 994 | 1317 | 32·4 | 899 | 384 |
| जयपुर | 3888 | 5221 | 35·1 | 897 | 471 |